"भावात् भावम्"

डॉ. सुशील अग्रवाल

1. विषय प्रवेश

"भावात् भावम्" वैदिक ज्योतिष का एक महत्वपूर्ण घटक है जिसका फलित में प्रयोग किया जाता है। "भावात् भावम्" का शाब्दिक अर्थ है : भावात् = "भाव से" और भावम् = "भाव को"। सरल भाषा में किसी भी भाव का भावात् भावम् उस भाव से उतने ही भाव आगे वाला भाव होता है। जैसे, पंचम भाव से पांच भाव आगे (5, 6, 7, 8, 9) वाले नवम भाव को पंचम का भावात् भावम् कहते हैं। भावों का क्रम सामान्य ही रहेगा, लग्न = I, द्वितीय = II, तृतीय = III,.....और द्वादश = XIII

मुख्यतः, "भावात् भावम्" का प्रयोग कुंडली में किसी भाव के सूक्ष्म फलों को जानने के लिए किया जाता है। यही इस लेख का विषय भी है।

2. शास्त्रीय सन्दर्भ

बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् मारकभेदाध्याय, श्लोक 2 और लघुपाराशरी के श्लोक 23 में भावात् भावम् का आयु के सम्बन्ध में संकेत है। इनमें कहा गया है कि लग्न से अष्टम भाव आयु स्थान है और अष्टम से अष्टम भाव (तृतीय भाव) भी आयु स्थान है। इसी प्रकार, इन दोनों आयु स्थानों के द्वादश भावों, सप्तम और द्वितीय को मारक भाव कहा गया है।

3. फलित के दृष्टिकोण से

कुंडली के केवल विषम भाव ही भावात् भावम् हो सकते हैं। प्रत्येक विषम भाव कुंडली के दो भावों का भावात् भावम् होता है। सम भाव कभी भी भावात् भावम् नहीं होते। निम्न कुंडली के भावों में भाव संख्या अंकित की गयी है, जिनके वे भावात् भावम् हैं। जैसे एकादश भाव में VI और XII अंकित है तो एकादश भाव षष्ठम और द्वादश भाव का भावात् भावम् है।

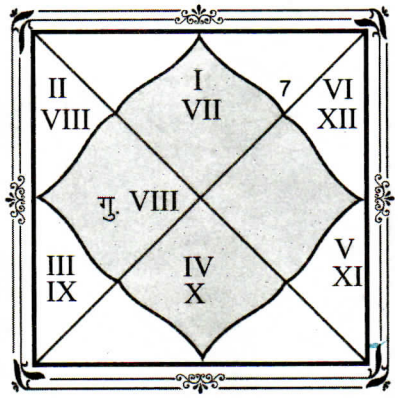

किसी भी भाव के सूक्ष्म फलों से तात्पर्य, उस भाव से अधिक उत्कृष्ट फलों से या भाव के कारकत्वों में वृद्धि से या फलों की गुणवत्ता की गहनता से है। अर्थात, किसी भाव सम्बंधित फलों की प्राप्ति के पश्चात् उसमें और क्या वृद्धि या उत्कृष्टता संभव है। जैसे, दूध को यदि भाव से देखा जाय तो उसकी मलाई को भावात् भावम् नियम से देखेंगे। जैसे, कॉलेज की शिक्षा का भाव पंचम है तो पंचम से पंचम यानी नवम भाव से उसकी उच्च शिक्षा देखते हैं। परन्तु, यदि पंचम से शिक्षा में कमी दिख रही हो तो नवम से उच्च शिक्षा आदि देखने की आवश्यकता नहीं है। दूध ही नहीं है तो मलाई कहाँ से आएगी? अर्थात, जो फल आपको भाव से मिल रहे हैं उसी के स्तर में ही वृद्धि देखनी चाहिए। इसे हम ऐसे भी कह सकते हैं कि संसाधन मूल भाव के ही रहेंगे। इसी प्रकार, द्वितीय भाव यदि वाणी का भाव है तो उसका भावात् भावम् तृतीय भाव संप्रेषण दर्शाता है जो अच्छी वाणी का ही सूक्ष्म या उत्कृष्ट रूप है।

फलित में यदि भावेश अपने भावात् भावम् में बैठ जाये तो मूल भाव के कारकत्व में गुणात्मक वृद्धि होती है। जैसे, षष्ठेश यदि एकादश (षष्ठम से षष्ठम भाव) में स्थित हो तो जातक को षष्ठम भाव के फल अधिक तीव्रता से एवं बारम्बार मिलने लगते हैं, अर्थात एक के बाद एक बीमारी आती रहती है या एक ऋण खत्म होता है तो दूसरा शुरू हो जाता है। द्वितीयेश यदि तृतीय में बैठ जाय तो जातक को धन प्राप्ति के लिए वाणी आदि का भी प्रयोग करना पड़ता है। इसी प्रकार, चतुर्थेश यदि सप्तम में हो तो जातक कुछ न कुछ पढ़ाई करता ही रहता है।

4. आध्यात्मिक दृष्टिकोण से

इस सिद्धांत को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी देख सकते हैं।

– उपरोक्त चित्र में देखें कि धर्म त्रिकोण (I, V, IX) के भावों का भावात्–भावम् धर्म त्रिकोण के भाव ही होते हैं। अर्थात, धर्म के लिए व्यक्तित्व, बुद्धि और न्यायपूर्ण

दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है इसीलिए धर्म का आधार धर्म ही होता है।

– अर्थ त्रिकोण (II, VI, X) के भावों का भावात् भावम् काम त्रिकोण (III, VII, XI) के भाव होते हैं। अर्थात, आजीविका और अर्थ के लिए पराक्रम करना होता है, सामाजिक संबंधों में आना होता है और कर्म करते–करते लोभ–लालच–इच्छाओं की उत्पत्ति भी होती है जिससे आसक्ति अर्थात काम की उत्पत्ति होती है।

– काम त्रिकोण (III, VII, XI) के भावों का भावात् भावम् धर्म त्रिकोण (I, V, IX) के भाव होते हैं। अर्थात, काम का आधार धर्म होना चाहिए जिसका भगवत् गीता में भी विस्तार से वर्णन है। आजीविका आदि के लिए जो भी कर्म करें उसको धर्म के पालन की तरह करें जिससे आसक्ति उत्पन्न न हो।

– मोक्ष त्रिकोण (IV, VIII, XII) के भावों का भावात् भावम् काम त्रिकोण (III, VII, XI) के भाव होते हैं। मनुष्य किसी भी क्षण कर्म किये बिना तो रह नहीं सकता इसीलिए मोक्ष प्राप्ति के लिए भी कर्म तो करने ही हैं। एक कर्म अर्थ के लिए किया गया जो अनिवार्य है और दूसरा यह है जो स्वयं की आध्यात्मिक उन्नति के लिए करना है।

5. उदाहरण

आइये, अब कुछ उदाहरणों के माध्यम से चर्चा करते हैं :

उदाहरण–1 : स्वामी विवेकानन्द की कुंडली के वाणी भाव (द्वितीय) में वाणी कारक बुध की युति शुभ ग्रह शुक्र से है और भावेश केन्द्र में वाणी कारक बुध की राशि में चन्द्र से युत कर्म भावस्थ हैं अर्थात, वाणी

उदाहरण–1: 12 जनवरी 1863, 06:33, 88E22, 22N32

स्वामी विवेकानंद की जन्मकुंडली

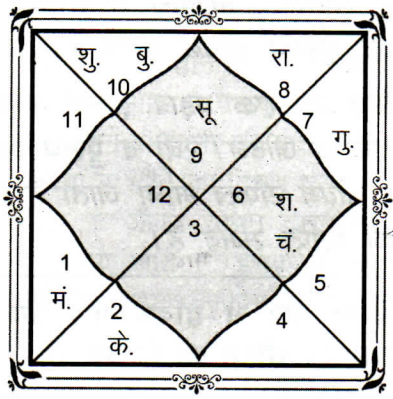

में आकर्षण एवं बुद्धिमत्ता होगी। द्वितीय भाव का भावात् भावम् है तृतीय भाव जो गुरु से दृष्ट है और भावेश द्वितीयेश शनि ही हैं। वाणी का उत्कृष्ट स्तर सम्प्रेषण में है और इस स्थिति ने उन्हें कितना उत्कृष्ट एवं प्रभावशाली सम्प्रेषण शक्ति दी यह तो हम सब जानते हैं।

उदाहरण–2 :

जन्म 15–1–1992, 21:35 बजे, दिल्ली

जन्मकुंडली (डी–1)

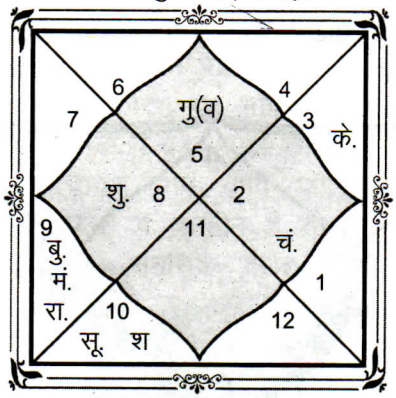

केंद्र में केवल शुभ ग्रहों का प्रभाव है। कुंडली में गज–केसरी, बुध–गुरु, सरस्वती और शंख योग हैं। गुरु का प्रभाव लग्न के अतिरिक्त पंचम और नवम पर जा रहा है। लग्नेश सूर्य 1 डिग्री के होकर वर्गोत्तम हैं और स्वराशिस्थ शनि के साथ प्रतिस्पर्धा भाव में हैं।

बुद्धि के प्रतीक बुध, जो उपरोक्त वर्णित शिक्षा विशिष्ट योगों में लिप्त हैं, जन्मकुंडली में पंचमस्थ हैं। कुल मिलाकर कॉलेज की शिक्षा अच्छी है। अब पंचम की उत्कृष्टता के लिए पंचम के भावात् भावम् नवम का आकलन करते हैं। जन्मकुंडली में नवमेश पंचमस्थ हैं और बुध से युत हैं, गुरु से दृष्ट हैं और राह/केतु अक्ष पर हैं। जातिका अमेरिका से पीएच. डी कर रही है।

6. निष्कर्ष

यदि कुंडली के मूल भाव के अनुसार अच्छे फल हैं तो उसके उत्कृष्ट फलों को उस भाव के भावात् भावम् से देखना चाहिए। इसके अतिरिक्त भावेश यदि अपने भावात् भावम् में स्थित हो तो वह अपने मूल भाव के कारकत्व में गुणात्मक वृद्धि करता है।❐

पता : बी– 301, सोम अपार्टमेंट, सेक्टर–6, प्लॉट–24, द्वारका, नई दिल्ली–75
मो. 9810162371

राजेश्वर दाती जी महाराज

वशीकरण, ऊपरी बाधा, काम बंधन खोलना, पितृ दोष, कालसर्प दोष शांति, ग्रह बाधा शांति, तांत्रिक अनुष्ठान, जाप, हवन तथा कर्मकांड एवं महामृत्युंजय एवं गायत्री जाप के लिए संपर्क करें।

फोन : 9212120817, ए–32–ए, जवाहर पार्क, देवली रोड, नयी दिल्ली–62